International Journal of Home Science 2017; 3(2): 546-549

ISSN: 2395-7476
IJHS 2017; 3(2): 546-549
© 2017 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 22-03-2017
Accepted: 23-04-2017

डॉ. जयश्री बाथम
सहायक प्राध्यपक, गृहविज्ञान विभाग (मानव विकास) श्री रेवा गुर्जर बाल निकेतन महाविद्यालय, सनावद, जिला– खरगोन (म.प्र.) भारत

डॉ. छाया हार्डिया
विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान विभाग (पारिवारिक संसाधन प्रबंध) श्री रेवा गुर्जर बाल निकेतन महाविद्यालय, सनावद, जिला– खरगोन (म.प्र.) भारत

Correspondence
डॉ. जयश्री बाथम
सहायक प्राध्यपक, गृहविज्ञान विभाग (मानव विकास) श्री रेवा गुर्जर बाल निकेतन महाविद्यालय, सनावद, जिला– खरगोन (म.प्र.) भारत

शहरी एवं ग्रामीण किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन (खंडवा जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. जयश्री बाथम, डॉ. छाया हार्डिया

सारांश
किशोरावस्था परिवतर्नों तथा समस्या बाहुल्य कि अवस्था है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ समय के लिए कष्ट, चिंताएं, उदासी, दुख तथा मायुसी देखी जाती है। परन्तु किशोरावस्था में चिंता प्रतिकिया उत्पन्न होना बहुत सामान्य है तथा उसकी आवृत्ति की आशंका भी सबसे अधिक इसी समय होती है। प्रस्तुत शोध हेतु खण्डवा शहर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के 13 से 16 वर्ष के 150 चिंता एवं 150 कुण्ठा का चयन दैव निदर्शनद विधि से किया गया। शोध हेतु डॉ. ए. के. सिहं एवं ए. सेनगुप्ता द्वारा निर्मित चिंता मापनी परीक्षण प्रपत्र तथा डॉ. बी.एम.दीक्षित एवं डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित नैराश्य माप परीक्षण प्रपत्र का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –1. शहरी किशोरों की चिंता तथा कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। इसमें शहरी किशोरों में चिंता की अपेक्षा कुंठा अधिक पायी गयी। इसका कारण है कि किशोरों में सामान्य परेशानी या डर भी धीरे–धीरे कुंठा का रूप ले लेती है। शहरी किशोरों में प्रतिस्पर्धा और शिक्षा को लकर अधिक चिंता व कुंठा पायी जाती है। 2. ग्रामीण किशोरों की चिंता तथा कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। इसमें ग्रामीण किशोरों में चिंता की अपेक्षा कुंठा अधिक पायी गयी। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण किशोरों में कुंठा अधिक होने के कारण है कि उनके माता पिता का कम शिक्षित होना और आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से अपरिचित होना मुख्य है।

Keywords: शहरी, ग्रामीण, चिंता, कुंठा

प्रस्तावना
वर्तमान समय में लगभग प्रत्येक व्यक्ति चिंता एवं कुंठा के माहौल में जी रहा है। यह चिंता व कुंठा व्यक्ति के पारिवारिक व सामाजिक, आर्थिक व्यवासायिक वातावरण को समान रूप से प्रभावित कर रही है। इस कारण किशोरों में चिंता तथा कुंठा लगातार बढ़ रही है। शिक्षा प्रतिस्पर्धा आदि की समस्या गंभीर रूप ले रही है। चिंता व कुंठा की वजह से होने वाले शारीरिक व मानसिक प्रभाव के बारे में बहुत से शोध हो चुके है। जिसमें यह बताया गया है कि चिंता व कुंठा से उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है। चिंता व कुंठा सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार की होती है। जहाँ सकारात्मक चिंता व कुंठा किशोरों की उत्पादन क्षमता को बढ़ाती है व नवाचार एवं सृजन को जन्म देती है। वहीं नकारात्मक चिंता व कुंठा कार्य की क्षमता को घटाते हैं। सामान्यतः हम जिस कुंठा व चिंता की बात कर रहे है वह नकारात्मक चिंता व कुंठा ही है, जो कि किशोरों के कार्यस्थल से उत्पन्न होती है।
अतः उनके लिए चिंता, भय, तनाव, कुंठा एवं अस्थिरता का प्रदर्शन स्वाभाविक है। इसलिए वर्तमान में यह आवश्यकता महसूस की गई कि किशोरावस्था के विद्यार्थियों की चिंता तथा कुंठा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान उन्हें प्रभावित करती रहती हैं, जिससे उनके परिणाम भी प्रभावित होते हैं।
वर्निस, एड्रयू व चील्डीं जॉन एम. (2004) ने विद्यार्थियों के तनाव जीवन और उपलब्धि का अवसाद चिंता के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में महाविद्यालय में प्रवेश के समय व परीक्षा के समय अवसाद व चिंता के स्तर का अध्ययन करना था। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि 09 प्रतिशत विद्यार्थियों में अवसाद के लक्षण महाविद्यालयीन अध्ययन के दौरान उत्पन्न होने लगते हैं और 20 प्रतिशत विद्यार्थियों में चिंता का स्तर क्लीनिकली सार्थक पाया गया।
श्री. साइमन तथा अन्य (2011) द्वारा प्रस्तुत इस अध्ययन में किशोरों में मध्यम श्रेणी तथा उच्च श्रेणी चिंता के विकास का परीक्षण करना तथा किशोरों कि चिंता पर अभिभावकों द्वारा किये गये नियामक उपायों का प्रभाव तथा किशोर अभिभावक चिंता एवं अभिभावकों की चिंता के किशोरों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया।

उद्देश्य
1. शहरी एवं ग्रामीण किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

2. शहरी एवं ग्रामीण, सामान्य व आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध प्रक्रिया एवं प्रविधि–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए खण्डवा नगर के विभिन्न स्थानों के विद्यालयों से किशोरों का चयन दैव निदर्शन प्रणाली से किया गया था। यह प्रणाली समग्र की किसी भी इकाई को वांछनीय या अवांछनीय न मानकर व सभी को चुने जाने का समान अवसर देते हुए बिना किसी पक्षपात व मिथ्या झुकाव के पूर्णतः संयोग या दैव संयोग पर आधारित होती है। निदर्शन हेतु किशोरों का चयन किया गया, जिसमें 150 शहरी एवं 150 ग्रामीण किशोरों का चयन किया गया।

उपकरण :–

प्रस्तुत शोध हेतु डॉ. ए.के. सिंह एवं डॉ. ए. सेनगुप्ता द्वारा निर्मित चिंता मापनी परीक्षण प्रपत्र तथा डॉ. बी.एम.दीक्षित एवं डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित नैराश्य माप परीक्षण प्रपत्र का उपयोग किया गया।

परिकल्पनाएँ:

1. शहरी एवं ग्रामीण किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण, सामान्य व आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

परिणाम तथा विवेचना:

1. शहरी एवं ग्रामीण किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसम्बन्ध

शोध का प्रथम उद्देष्य था ''शहरी एवं ग्रामीण किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना'', इस उद्देश्य से सम्बन्धित प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रोडक्ट मूवमेन्ट सहम्बन्ध विधि से किया गया, जिसके परिणाम निम्न तालिका में दिया गया है।

तालिका 1: शहरी एवं ग्रामीण किशोरों में चिंता तथा कुंठा के माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्रता की कोटि, सहसम्बन्ध एवं सहसम्बन्ध गुणांक

क्र.	क्षेत्र	चर युग्म	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	सहसम्बन्ध	सहसम्बन्ध गुणांक
01	शहरी	चिंता	150	12.08	2.37			
		कुंठा	150	106.68	20.51	298	+.275	4.77''
02	ग्रामीण	चिंता	150	13.37	13.16			
		कुंठा	150	84.15	22.36	298	+.284	5.33''

0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक 4.8 से स्पष्ट है कि शहरी किशोरों में चिंता तथा कुंठा की स्वतंत्रता कोटि (df) 298 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सहसम्बन्ध (r) का मान 0.275 है, जबकि सहसम्बन्ध गुणांक (t) का मान 4.77 है जो कि तालिका मान (table value) 2.59 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho) ''शहरी किशोरों में चिंता एवं कुंठा के माध्यों में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, निरस्त की जाती है। सहसंबंध का मान धनात्मक एवं सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि शहरी किशोरों की चिंता एवं कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। शहरी किशोरों में चिंता व कुंठा के कारण शारीरिक एवं मानसिक असमानताएँ पायी गयी। इन असमनाताओं के कारण किशोरों में जागरूकता की कमी, लक्ष्य प्राप्ति में बाधा, आर्थिक कमी, मानसिक संघर्ष व विफलता आदि कारण परिणाम देखे गये हैं।

ग्रामीण किशोरों में चिंता तथा कुंठा की स्वतंत्रता कोटि (df) 298 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सहसम्बन्ध (r) 0.284 है, जबकि सहसम्बन्ध गुणांक का मान (t) 5.33 है जो कि तालिका मान (table value) 2.59 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho) ''ग्रामीण किशोरों में चिंता एवं कुंठा के माध्यों में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, निरस्त की जाती है। सहसंबंध का मान धनात्मक एवं सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण किशोरों की चिंता एवं कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। ग्रामीण किशोरों में चिंता व कुंठा के कारण अज्ञानता, अस्वच्छ वातावरण, उचित पोशण न मिल पाना, बुद्धिलब्धि आदि कारण परिणाम देखे गये है।

अतः तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो शहरी किशोरों में सामान्य चिंता आगे चलकर कुंठा में परिवर्तित हो जाती है। तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि शहरी किशोरों की चिंता का माध्य 12.08 है जो कि ग्रामीण किशोरों की चिंता के माध्य 13.37 से कम है। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण किशोरों में चिंता अधिक पायी गयी। शहरी किशोरों में कुंठा का माध्य 106.68 है जो कि ग्रामीण किशोरों में कुंठा के माध्य 84.15 से अधिक है। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी किशोरों में कुंठा अधिक पायी गयी।

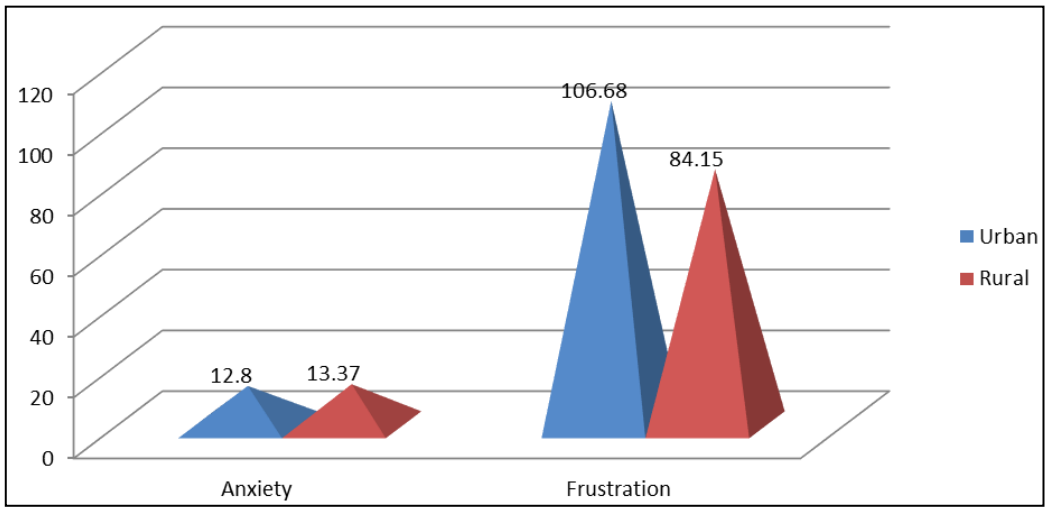

Fig: शहरी एवं ग्रामीण किशोरों की चिंता एवं कुंठा के माध्य फलांको को दर्शाता रेखीय चित्रण

2. शहरी एवं ग्रामीण, सामान्य व आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसम्बन्ध

शोध का द्वितीय उद्देश्य था ''शहरी एवं ग्रामीण, सामान्य व आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना'', इस उद्देष्य से सम्बन्धित प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रोडक्ट मूवमेन्ट सहसंबंध विधि से किया गया, जिसका परिणाम निम्न तालिका में दिया गया है।

तालिका 4.10: शहरी एवं ग्रामीण, सामान्य व आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता तथा कुंठा के माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्रता की कोटि, सहसम्बन्ध एवं सहसम्बन्ध गुणांक

क्र.	क्षेत्र	चर युग्म	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	सहसम्बन्ध	सहसम्बन्ध गुणांक
01	शहरी सामान्य जाति	चिंता	69	12.08	02.79	136	.301	3.86''
		कुंठा	69	106.68	20.51			
02	ग्रामीण सामान्य जाति	चिंता	40	11.97	02.39	78	+.287	2.76''
		कुंठा	40	76.95	20.34			
03	शहरी आरक्षित जाति	चिंता	81	12.08	02.65	160	.240	3.22''
		कुंठा	81	106.71	25.75			
04	ग्रामीण आरक्षित जाति	चिंता	110	11.80	02.84	218	.268	4.26''
		कुंठा	110	84.56	23.04			

0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

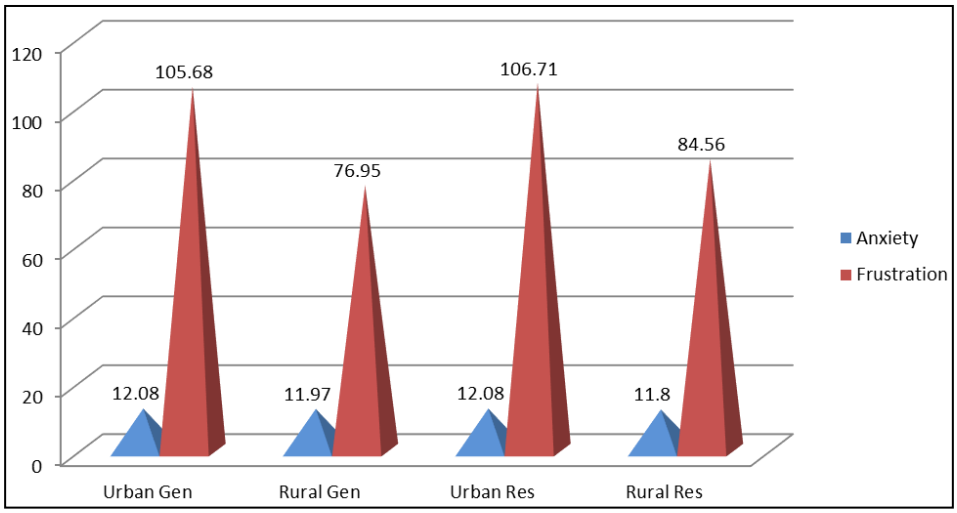

Fig: शहरी एवं ग्रामीण, सामान्य व आरक्षित जाति के किशोरों की चिंता एवं कुंठा के माध्य फलांकों को दर्शाता रेखीय चित्रण

तालिका 4.10 से स्पष्ट है कि शहरी सामान्य जाति के किशोरों में चिंता तथा कुंठा का स्वतंत्रता कोटि (df) 136 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सहसम्बन्ध का मान (r) 0.301 है, जबकि सहसम्बन्ध गुणांक (ज) का मान 3.86 है जो कि तालिका मान (table value) 2.62 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho) ''शहरी सामान्य जाति के किशोरों में चिंता एवं कुंठा के माध्यों में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।'' निरस्त की जाती है। अतः स्पष्ट है कि शहरी सामान्य जाति के किशोरों की चिंता एवं कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। सहसंबंध का मान सार्थक है। शहरी सामान्य जाति के किशोरों में चिंता व कुंठा के कारण, नौकरी, शासकीय सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो पाती है। सामान्य जाति की तुलना में आरक्षित जाति को शिक्षा में अधिक लाभ मिलता है।

ग्रामीण सामान्य जाति किशोरों में चिंता तथा कुंठा की स्वतंत्रता कोटि (df) 78 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर पर सहसम्बन्ध (df) 0. 287 है, जबकि सहसम्बन्ध गुणांक (t) का मान 2.76 है जो कि तालिका मान (table value) 2.64 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः शून्य परिकल्पना (Hc) ''ग्रामीण सामान्य जाति के किशोरों में चिंता एवं कुंठा के माध्यों में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।'' निरस्त की जाती है। सहसंबंध का मान धनात्मक तथा सार्थक पाया गया। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण सामान्य जाति के किशोरों की चिंता एवं कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। ग्रामीण सामान्य जाति के किशोरों में चिंता व कुंठा का कारण ग्रामीण वातावरण, नई तकनीकी, नई सुविधाएं प्राप्त न हो पाने पर परिवार की पारंपरिक सोच, आधुनिकता को महत्व न देना, आदि कारण परिणामस्वरूप देखे गये हैं।

शहरी आरक्षित किशोरों में चिंता तथा कुंठा की स्वतंत्रता कोटि (df) 160 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सहसम्बन्ध (r) का मान 0.240 है, जबकि सहसम्बन्ध गुणांक(ज) का मान 3.22 है जो कि तालिका मान (tabel value) 2.61 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः तालिका मान 2.58 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho) ''शहरी आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता एवं कुंठा के माध्यों में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।'' निरस्त की जाती है। सहसंबंध का मान सार्थक पाया गया। अतः स्पष्ट है कि शहरी आरक्षित जाति के किशोरों की चिंता एवं कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। शहरी आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता व कुंठा का कारण समाज में उनके साथ उचित व्यवहार नहीं किया जाता है, साथ ही भविष्य के प्रति चिंता आदि कारण परिणामस्वरूप देखे गये हैं।

ग्रामीण आरक्षित जाति किशोरों में चिंता तथा कुंठा की स्वतंत्रता की कोटि (df) 218 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सहसम्बन्ध (r) का मान 0.268 है, जबकि सहसम्बन्ध गुणांक (t) का मान 4.26 है जो कि तालिका मान (table value) 2.60 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho) ''ग्रामीण आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता एवं कुंठा के माध्यों में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।'' निरस्त की जाती है। सहसंबंध का मान सार्थक पाया गया। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण आरक्षित जाति के किशोरों की चिंता एवं कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। ग्रामीण आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता व कुंठा का कारण शासकीय योजनाओं का ज्ञान नई तकनीकों की जानकारी नहीं होती है व जागरूकता में कमी आदि कारण परिणाम में देखे गये हैं।

शहरी सामान्य जाति के किशोरों में चिंता का माध्य 12.08 है, जो कि ग्रामीण सामान्य जाति के चिंता का माध्य 11.97 से उच्च है। शहरी सामान्य जाति के किशोरों में कुंठा का माध्य 106.68 है, जो

कि ग्रामीण सामान्य जाति के चिंता का माध्य 76.95 से उच्च है। शहरी आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता का माध्य 12.08 है, जो कि ग्रामीण आरक्षित जाति के चिंता का माध्य 11.80 से उच्च है। शहरी आरक्षित जाति के किशोरों में कुंठा का माध्य 106.71 है, जो कि ग्रामीण आरक्षित जाति के चिंता का माध्य 84.56 से उच्च है।

अतः तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो शहरी जाति के किशोरों की चिंता व कुंठा ग्रामीण जाति के किशोरों की चिंता व कुंठा की तुलना में उच्च है। शहरी सामान्य जाति एवं शहरी आरक्षित जाति के किशोरों से अधिक चिंता व कुंठा पाई गई है। तेजी से बदलते परिवेष में अपने आप को आगे रखना, परिवार द्वारा अपेक्षाएँ, भविष्य की योजनाएं प्रतियोगिता, अस्वस्थ वातावरण आदि कारण चिंता व कुंठा को उत्पन्न करती है, जबकि ग्रामीण सामान्य जाति एवं ग्रामीण आरक्षित जाति के किशोरों में चिंता व कुंठा कम पाई गई है। क्योंकि ग्रामीण वातावरण, जागरूकता में कमी, माता–पिता का अशिक्षित होना, माता–पिता की पुरानी सोच, धार्मिक एवं पारस्परिक अवधारणा आदि कारण देखे गये हैं। लेकिन सामान्य चिंता आगे चलकर विकराल रूप का धारण कर लेती है। इसलिए चिंता का भयानक रूप कुंठा है।

निष्कर्ष :–

1. शहरी किशोरों की चिंता तथा कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। इसमें शहरी किशोरों में चिंता की अपेक्षा कुंठा अधिक पायी गयी। इसका कारण है कि किशोरों में सामान्य परेशानी या डर भी धीरे–धीरे कुंठा का रूप ले लेती है। शहरी किशोरों में प्रतिस्पर्धा और शिक्षा को लकर अधिक चिंता व कुंठा पायी जाती है।
2. ग्रामीण किशोरों की चिंता तथा कुंठा में सार्थक सहसंबंध पाया गया है। इसमें ग्रामीण किशोरों में चिंता की अपेक्षा कुंठा अधिक पायी गयी। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण किशोरों में कुंठा अधिक होने के कारण है कि उनके माता पिता का कम शिक्षित होना और आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से अपरिचित होना मुख्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. गुप्ता, बी. एन. *सांख्यिकी.* आगराः पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लिमिटेड. 2002.
2. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. *व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ.* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन. पृष्ठ क्र. 183. 2010.
3. जीत, भाई योगेन्द्र. *बाल मनोविज्ञान.* आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर.
4. दीक्षित, निरुपमा, सिंह, लाभ एवं तिवारी, गोविंद. *असामान्य मनोविज्ञान.* आगराः विनोद पुस्तक मंदीर. पृष्ठ क्र. 2001. 119–121
5. भार्गव, महेश, *आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन.* आगराः एच. पी. भार्गव बुक हाउस पुस्तक प्रकाशन एवं वितरक.